वर्ष :: 34 अंक : 07
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

23वें झारखंड स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं !

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता

झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

बोकारो :: बुधवार, 15 नवंबर, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका

अवश्य पढ़ें-
निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मेनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

‘मैं रत्नगर्भा हूं, फिर भी बदहाल हूं’

– : डी. के. वत्स :–

‘अमूमन एक जवान काफी ऊर्जावान होता है। उसकी जिंदगी को इस उम्र के पड़ाव से नई दशा-दिशा मिलती है और भविष्य की बुनियाद तय होती है। लेकिन, मैं इस मामले में शायद भाग्यहीन हूं। मेरा जन्म तो आंदोलनों और संघर्षों की परिणति रहा, परंतु जन्म से लेकर आज तक मैं अपनों की धोखेबाजी और राजनीतिक उथल-पुथल का ही शिकार बना रहा। मेरी गोद में प्राकृतिक संसाधनों की भरमार है। रत्नगर्भा होने के बावजूद महज सियासत और लूट-खसोट ने मुझे आज इस मोड़ पर ला खड़ा कर दिया है कि आज भी मेरा भविष्य सुरक्षित नजर नहीं आ रहा और यही मेरी परेशानी का कारण है। मेरा दुर्भाग्य देखिए, जिसने मेरी हिफाजत की कसमें खाकर कुर्सियां संभालीं, सबसे ज्यादा वो ही मेरे लुटने का कारण बने।’

यह व्यथा है झारखंड की। 23 साल के उस नौजवान प्रदेश की, जिसका निर्माण बड़ी ही उम्मीदों के साथ हुआ था। लेकिन, इसके साथ ही सृजित उत्तराखंड और छत्तीसगढ़ राज्यों की अपेक्षाकृत स्थिति यहां की तमाम स्थितियां बयां करने के लिए काफी है। शुरू से ही यहां केवल येन-केन-प्रकारेण सत्ता पाने और प्राकृतिक संसाधनों की लूट-खसोट का ही खेल चलता रहा है। राज्य के विकास को लेकर सकारात्मक सोच की बजाय दल-बदल और तख्ता पलट में ही हमारे यहां के सियासतदां व्यस्त रहे। यही कारण है कि मात्र 23 साल के भीतर इस राज्य ने 14 मुख्यमंत्री देख लिए। राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री तक भ्रष्टाचार के आरोप में जेल की यात्रा कर चुके हैं और एक बार फिर यह आशंका गहराती दिख रही है। जल, जंगल, जमीन की रक्षा की जिस शपथ के साथ शासन संभाली गई थी, वहां जमीन घोटाले की आंच में सबसे ज्यादा राज्य के शीर्षतम सत्ताधारी झुलस रहे हैं। यह सियासी खींचतान व सत्तासुख की लड़ाई और सिर्फ स्वयं के विकास की होड़ का ही नतीजा रहा कि इन 22-23 वर्षों में केवल एक सीएम रघुवर दास (भाजपा) का कार्यकाल ही पांच वर्षों तक चल सका। वर्तमान हेमंत सरकार (झामुमो-कांग्रेस) भी इस रास्ते पर गतिशील है। तीन-तीन बार तो राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू रहा, जो यहां की राजनीतिक अस्थिरता का परिणाम रही।

राज्य गठन के बाद बाबूलाल मरांडी 15 नवंबर 2000 से लेकर 18 मार्च 2003 तक तीन साल के लिए इस राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री रहे। इसके बाद अर्जुन मुंडा 2 साल के लिए मार्च 2003 से 2005 तक सीएम बने। फिर 2 मार्च 2005 से 12 मार्च 2005 तक शिबू सोरेन मात्र 10 दिन के लिए मुख्यमंत्री बने। इसके बाद अर्जुन मुंडा मात्र एक वर्ष, मधु कोड़ा 2006 से 2008 तक दो साल और शिबू सोरेन फिर एक साल के लिए मुख्यमंत्री बने। मधु कोड़ा का कार्यकाल क्या रहा और किस कदर घोटालों का इतिहास राष्ट्रीय कुख्याति बनी, यह जगजाहिर है। फिर एक साल 10 दिन के लिए वर्ष 2009 में राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू रहा। शिबू...(शेष पेज-7 पर)

vedanta
transforming for good

ESL STEEL LIMITED

बुलंद झारखण्ड

की ओर बढ़ता हर एक कदम, को ईएसएल का हौसला हर दम

FY २३ - FY २४

उत्पादकता में
66%
की छलांग

सीएसआर व्यय में
32%
की बढ़ोतरी

प्रत्यक्ष रोजगार के अवसरों में
32%
की वृद्धि

सीएसआर परियोजना के माध्यम से रोजगार के अवसरों में
25%
की उन्नति

- संपादकीय -

आत्म-विश्लेषण की जरूरत

झारखंड आज अपनी स्थापना की 23वीं वर्षगांठ मना रहा है। झारखंड के साथ ही देश के तीन नए राज्यों का गठन हुआ, जिनमें झारखंड के साथ-साथ छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड शामिल हैं। लेकिन, इन 23 वर्षों में छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड कहां पहुंच गए और झारखंड कहां खड़ा है, इस पर हमें आत्म-विश्लेषण करने की जरूरत है। सच कहें तो केन्द्र की अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने बिहार को विभाजित कर झारखंड अलग राज्य का गठन इसलिए किया था, ताकि यहां का चतुर्दिक विकास हो सके। परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर प्राकृतिक खनिज संपदाओं के मामले में सबसे अधिक धनी झारखंड आज लुटेरों का चारागाह बन चुका है। बेरोजगारी और गरीबी के कारण इस प्रदेश के लोग आज भी देश-विदेश में पलायन करने को विवश हैं। सुबह होते ही गांव-गांव से हजारों की सख्या में लोग दैनिक मजदूरी के लिए शहरों की तरफ भागते हैं, लेकिन यह जरूरी नहीं कि सारे लोगों को दिहाड़ी मजदूरी का काम मिल ही जाए और वे दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद शाम को कुछ रुपये लेकर अपने घरों में वापस लौटें। जबकि, दूसरी ओर सत्ता सिंहासन पर बैठे राजनेताओं और भ्रष्ट नौकरशाहों का गठजोड़ यहां की सार्वजनिक सम्पत्ति को लूटकर अपनी तिजोरी भरने में मशगूल है। प्रदेश के खजाने को लूटने के आरोप में कई बड़े-बड़े अधिकारी और राजनेताओं के शागिर्द जेल की सलाखों के पीछे कैद हैं, जबकि मुख्यमंत्री सहित कई अन्य प्रभावशाली लोग आज भी ईडी और सीबीआई के रडार पर हैं। इतना ही नहीं, अब तो राजनीतिक संरक्षण में पल रही राष्ट्रद्रोही ताकतों ने भी झारखंड में अपने पैर पसार लिए हैं। यही वजह है कि झारखंड में ईडी के बाद अब एनआईए (नेशनल इन्वेस्टिगेटिव एजेंसी) को भी खतरा महसूस हो रहा है। इसे लेकर गृह मंत्रालय को भी आगाह कर दिया गया है। केंद्र सरकार ने झारखंड की हेमंत सोरेन सरकार को एनआईए के अफसरों और दफ्तरों की सुरक्षा बढ़ाने को कहा है। मालूम हो कि ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) इसके पहले ही केंद्रीय गृह मंत्रालय को सुरक्षा संबंधी आशंकाओं से अवगत कराते हुए पत्र लिख चुकी है। इसके बाद ईडी के रांची स्थित जोनल ऑफिस की सुरक्षा बढ़ाई जा चुकी है। अफसरों की सुरक्षा भी कड़ी कर दी गई है। इधर, एनआईए की ओर से सुरक्षा को लेकर चिन्ता जताने के बाद केंद्रीय गृह मंत्रालय ने झारखंड सरकार के मुख्य सचिव और गृह कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग के अपर मुख्य सचिव को एनआईए की चिंता से अवगत कराते हुए सुरक्षा बढ़ाने को कहा है। एनआईए का कहना है कि वह राज्य में कई गंभीर मामलों की जांच कर रही है। इस सिलसिले में अफसरों को सुदूर गांवों और जोखिम वाले इलाकों में जाना पड़ता है। ऐसे में जांच से प्रभावित हो रहे संगठनों से जुड़े लोग अफसरों को नुकसान पहुंचा सकते हैं। झारखंड में एनआईए प्रतिबंधित संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई), भाकपा माओवादी सहित आतंकी संगठनों के खिलाफ जांच कर रही है। एजेंसी ने जांच के दौरान कई बड़े खुलासे भी किए हैं और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बने कई वांटेड आतंकियों, नक्सलियों, अपराधियों को ट्रैप भी किया है। दरअसल, केंद्र के निर्देश के बाद राज्य की सरकार एनआईए के दफ्तर के साथ-साथ जांच में लगे अफसरों की सुरक्षा बढ़ाने की तैयारी कर रही है। इसके पहले ईडी ने भी केंद्र को सुरक्षा संबंधी चिंताओं से अवगत कराया था। उसने अदालत में दिए गए एक आवेदन में भी खतरों का जिक्र किया है। इसके बाद ही ईडी को रांची के बिरसा मुंडा जेल में छापेमारी की इजाजत मिली और छापेमारी में ईडी को ऐसे कई सबूत हाथ लगे, जिससे यह साफ हो गया कि जेल में बंद मनी लॉन्ड्रिंग के आरोपी ईडी के अफसरों को नुकसान पहुंचाने के लिए नक्सलियों और गैंगस्टरों से संपर्क साध रहे हैं। इस मामले में राजधानी रांची के बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार के अधिकारियों की कथित संलिप्तता की बात भी सामने आयी और इस सिलसिले में संबंधित लोगों को समन भेजकर ईडी उनसे पूछताछ भी कर चुकी है। इन परिस्थितियों में तो यही कहा जा सकता है कि झारखंड अलग राज्य के गठन का लाभ महज कुछ सफेदपोशों और भ्रष्ट नौकरशाहों तक ही सिमटकर रह गया है और अपनी कोख में अकूत प्राकृतिक सम्पदा का भंडार समेटे देश में सबसे अमीर इस प्रदेश की आम जनता आज भी अपनी गरीबी और बदहाली पर आंसू बहाने को विवश है। आखिर ऐसा कब तक चलता रहेगा? इस सवाल का जवाब आज 23 साल का युवा झारखंड अवश्य जानना चाहता है!

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com. Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

बिरसा मुंडा- जल, जंगल, जमीन के पुरोधा

एक सामान्य गरीब परिवार में जन्म लेकर, अभावों के बीच रहकर भी किसी का भगवान हो जाना कोई सामान्य बात नहीं है, लेकिन मात्र 25 वर्ष के जीवन काल में तमाम अभाव, मानसिक और शारीरिक यातनाओं के बीच अपने बचपन से लेकर भगवान बनने तक की इस यात्रा को बिरसा मुंडा ने पूरा किया। 19वीं सदी के उत्तरार्ध में उन्होंने आदिवासी समाज की दशा और दिशा बदलकर नए सामाजिक युग का सूत्रपात किया तो साथ ही, शौर्य की नई गाथा भी लिखी। आदिवासियों ने भी उन्हें सिर्फ नायक नहीं, बल्कि धरती आबा यानी धरती के पिता के साथ भगवान का दर्जा भी दिया।

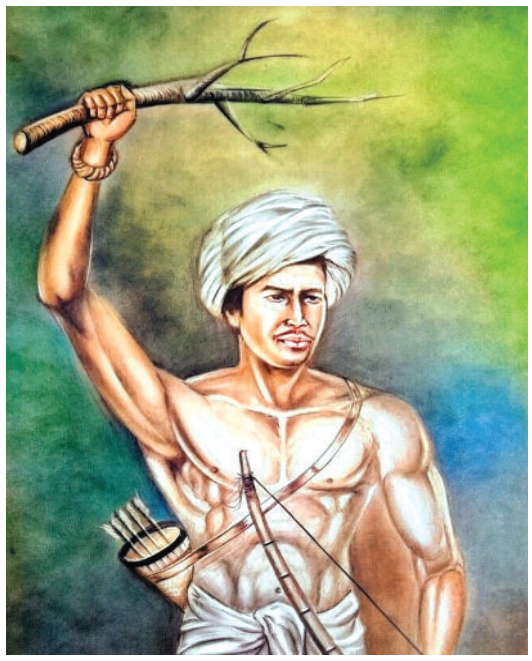

व्यक्तित्व : 15 नवंबर : बिरसा जयंती पर विशेष

जल, जंगल और जमीन को लेकर आदिवासियों का संघर्ष सदियों पुराना है। 19वीं सदी के उत्तरार्ध में भी जब भारत गुलामी का दंश झेल रहा था, इसी संघर्ष के बीच 15 नवंबर 1875 को तब के रांची जिले के उलिहातु गांव में सुगना मुंडा के घर एक बालक का जन्म हुआ। कहते हैं, उस दिन बृहस्पतिवार था, इसलिए बालक का नाम बिरसा रखा गया। घर की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी, बावजूद इसके पिता ने बिरसा को पढ़ने के लिए मिशनरी स्कूल भेजा। बात 1882 की है। एक तरफ गरीबी थी और दूसरी तरफ अंग्रेजों का लाया इंडियन फॉरेस्ट एक्ट। इस एक्ट का दुरुपयोग कर आदिवासियों से उनके जंगल के अधिकार को छीनने की शुरूआत हुई।

साल 1890 में 15 वर्ष की आयु में अपनी शिक्षा छोड़ने के बाद बालक बिरसा ने समग्र विचारों को विस्तार से समझने का संकल्प किया। इसके बाद आने वाले 5 साल (1890-95 तक) बालक बिरसा ने धर्म, नीति, दर्शन, वनवासी रीति रिवाज, मुंडानी परंपराओं का गहराई से अध्ययन किया। इसके साथ ही ईसाई धर्म और ब्रिटिश सरकार की नीतियों का भी गहराई से अध्ययन किया। अध्ययन के सार रूप में उन्होंने कहा - 'साहब-साहब टोपी एक!' बिरसा ने महसूस किया कि आचरण के धरातल पर आदिवासी समाज अंधविश्वास में फंसा है तो आस्था के मामले में वह भटका हुआ है। धर्म के बिंदु पर आदिवासी कभी मिशनरियों के प्रलोभन में आ जाते हैं तो कभी ढकोसलों को ही ईश्वर मानने लगते हैं। इसके ऊपर था, जमींदारों और ब्रिटिश शासन का शोषण। बिरसा ने तीन स्तरों पर आदिवासी समाज को संगठित किया। पहला, अंधविश्वास और ढकोसलों से दूर होकर स्वच्छता व शिक्षा का रास्ता। दूसरा, सामाजिक स्तर के साथ आर्थिक स्तर पर सुधार। इसके लिए बिरसा ने नेतृत्व की कमान संभाली और 'बेगारी प्रथा' के खिलाफ आंदोलन खड़ा किया। तीसरा, राजनीतिक स्तर पर आदिवासियों को अधिकारों को लेकर सजग करना। आदिवासियों को बिरसा मुंडा के रूप में अपना नायक मिला।

बिरसा ने अंग्रेजों द्वारा लागू की गई जमींदारी और राजस्व-व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई छेड़ी। बिरसा ने सूदखोर-महाजनों के खिलाफ भी बगावत की। ये महाजन कर्ज के बदले आदिवासियों की जमीन पर कब्जा कर लेते थे। बिरसा मुंडा के निधन तक चला ये विद्रोह 'उलगुलान' नाम से जाना जाता है। अगस्त 1897 में बिरसा ने अपने साथ करीब 400 आदिवासियों को लेकर एक थाने पर हमला बोल दिया। जनवरी 1900 में मुंडा और अंग्रेजों के बीच आखिरी लड़ाई हुई। रांची के पास दूम्बरी पहाड़ी पर हुई इस लड़ाई में हजारों आदिवासियों ने अंग्रेजों का सामना किया, लेकिन तोप और बंदूकों के सामने तीर-कमान जवाब देने लगे। बहुत से लोग मारे गए और कई लोगों को अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया। बिरसा पर अंग्रेजों ने 500 रुपये का इनाम रखा था। उस समय के हिसाब से ये रकम काफी ज्यादा थी।

कहा जाता है कि बिरसा की ही पहचान के लोगों ने 500 रुपये के लालच में उनके छिपे होने की सूचना पुलिस को दे दी। आखिरकार बिरसा चक्रधरपुर से गिरफ्तार कर लिए गए। अंग्रेजों ने उन्हें रांची की जेल में कैद कर दिया। कहा जाता है कि यहां उनको धीमा जहर दिया गया। इसके चलते 9 जून 1900 को वे शहीद हो गए।

वर्षों तक किताबों के भीतरी पन्नों या फिर क्षेत्र विशेष तक सिमटी रही बिरसा की इस वीरगाथा को याद दिलाते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था, ''भगवान बिरसा ने समाज के लिए जीवन जिया, अपनी संस्कृति और अपने देश के लिए अपने प्राणों का परित्याग कर दिया। इसलिए, वह आज भी हमारी आस्था में, हमारी भावना में हमारे भगवान के रूप में उपस्थित हैं।''

प्रधानमंत्री मोदी ने 15 नवंबर 2021 को बिरसा मुंडा की शौर्य गाथा का स्मरण कर उनकी याद में पहले संग्रहालय का उद्घाटन किया। साथ ही, इस दिन से पहली बार देश में बिरसा मुंडा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की शुरूआत की गई।

- साभार : बीओसी

मां भगवतीक आराधन

- बुद्धिनाथ झा -

- मैथिली गीत -

कमलक थोका आंखि दुनूटा,
डिमहा डग डग कजरायल
अरुणिम आभा द्युत कपोल पर,
केश कुंत छिड़िआयल
मदपम ठोर, वर्ण अति रक्तिम,
नाक कीर करु मातु
मधुरिम हंसी उघारय रहि रहि,
दारुण दाड़िम दांत।।

गिरिक शिखर पर अमल उमत
भल, कनक मेरु श्रृंगार
गह गह अलभ अमित धन
वैभव, आंगन सनक कपार
वाणी मम मन्दिर मानस मे, कर
वीणा ल' आयलि
नित्य वसंतक दर्शन दुर्लभ,
आद्या आबि जुड़ाओलि।।

खन निर्झर ध्वनि, खन घुंघरू बनि
नहु नहु पद ध' आबय
खन डामरु कल-कल खल
खल स्वर
शम्भु सनेस सुनाबय।।

दारुण दुर्लंघ्य पहाड़, ओहो
संकल्पें खाय पछाड़
दै छथि माता आशीष, बेटा,
झुकय ने कौखन शीश।।

कृपामयि! अहांक कृपा जं हएत
हिमाद्रि सिर ई' प्रसून' चढ़ि
जाएत!!

दीयों की जगमगाहट में घुली आस्था की रोशनी

संवाददाता

बोकारो : धन की अधिष्ठात्री देवी मां महालक्ष्मी की पूजा-अर्चना तथा दीयों व रोशनी का त्यौहार दीपावली बोकारो, उपशहर चास सहित आसपास के पूरे इलाके में धूमधाम के साथ मनायी गयी। हर बार की भांति इस बार भी दीपावली पर यहां भक्ति, श्रद्धा व आस्था के साथ-साथ उमंग, जोश व उल्लास का अनुपम संगम देखने को मिला। इस्पात नगरी में चारों तरफ का वातावरण आतिशबाजियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। वहीं, पूरा शहर दीयों तथा रंग-बिरंगे बिजली बल्बों की जगमगाहट से दमकता और दुल्हन की तरह प्रतीत होता रहा।

इस बार काली पूजा के साथ दीपावली का होना भक्ति के उत्साह में चार चांद लगाने जैसा रहा। दोगुने उत्साह के साथ लोगों ने इस पर्व को मनाया। शहर से गांव तक जगमग रोशनी में सराबोर रहा। लोगों ने पूरे उत्साह के साथ अपने आशियाने सजाये, रंगोलियां बनायीं और भक्तिभाव के साथ पूजन कर मां लक्ष्मी के अपने घर में स्थायी वास की कामना की।

एनपी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में मना दीपोत्सव

बोकारो के चीराचास स्थित एनपी टीचर ट्रेनिंग कॉलेज एवं एनपी संध्याकालीन स्नातक महाविद्यालय में दीपोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम महाविद्यालय के सचिव प्रमोद सिंह एवं एचओडी संजीव कुमार ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने दीप एवं रंगोली बनाकर दीपों का त्यौहार मनाया। मौके पर सचिव प्रमोद सिंह ने बढ़ते प्रदूषण के मद्देनजर ग्रीन पटाखा जलाने पर जोर दिया। उन्होंने बोकारो सहित राज्य और देश के निवासियों को दीपावली और छठ महापर्व की शुभकामनाएं दी। मौके पर महाविद्यालय के शालिग्राम सिंह, व्याख्याता रिमझिम सिंह, रूप लता सिंह, सीमा सिंह, कुमकुम कुमारी, भारती कुमारी, संचित गोस्वामी, नीलू कुमारी, भारती कुमारी एवं सभी शिक्षककेत्तर कर्मी और छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

एक दीया शहीदों के नाम... शहीदों के सम्मान में जगमगाए 2100 दीये

अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद की ओर से शहीदों के नाम पर विशेष दीपावली मनाई गई। एक दीया शहीदों के नाम का आयोजन सेक्टर-5 स्थित अय्प्पा सरोवर में किया गया। मौके पर पूर्व सैनिकों ने कहा कि हम सैनिकों या पूर्व सैनिकों की याद देशवासियों एवं नगरवासियों को कभी-कभी कुछ घटनाओं के बीच ही आती है। हम पूर्व सैनिकों का यह दायित्व बन जाता है कि अपने शहीद सैनिकों के सम्मान में एक दीया जरूर जलाएं। दीपावली की पूर्व संध्या पर शहीदों को शत-शत नमन एवं श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए 2100 दीये रौशन किए गए। सभी लोगों ने मिलकर शहीदों के सम्मान में नारा बुलंद किया। कार्यक्रम में परिषद के अलावे नगर के गणमान्य नागरिकों में हरिमोहन झा, एके सिंह, हरिनारायण, उन्नीकृष्णन, मोहन, सांसद प्रतिनिधि अशोक वर्मा, कमलेश राय, बिनोद कुमार, परिषद के पूर्व प्रांतीय उपाध्यक्ष दिनेश्वर सिंह, पूर्व प्रांतीय सचिव राकेश मिश्र, पूर्व जिला अध्यक्ष सुरेश, जिला अध्यक्ष शत्रुघ्न सिंह, महामंत्री संजीव आदि रहे।

श्यामा माई मंदिर : अनुपम साज-सज्जा और गीत-संगीत के बीच भक्तिरस की बही रसधार

प्रीति मिश्रा सहित कई कलाकारों ने बांधा समां

बोकारो में मैथिलों के समागम-स्थल व शहर की अनुपम धार्मिक धरोहर सेक्टर-2डी मिथिला चौक स्थित श्यामा माई मंदिर में दो-दिवसीय महाकाली पूजनोत्सव संपन्न हो गया। आकर्षक साज-सज्जा और गीत-संगीत के रमणीक वातावरण के बीच मां काली की भक्तिभाव से पूजा की गई। देररात तक भक्ति का संचार होता रहा। मैथिली कला मंच, कालीपूजा ट्रस्ट द्वारा आयोजित दो-दिवसीय इस महानुष्ठान में जहां मां काली की पूजा से श्रद्धा व भक्ति का माहौल बना रहा, वहीं रंगारंग प्रस्तुतियों की भी धूम मची रही। वार्षिक पूजनोत्सव के दौरान एक तरफ जहां मां काली की पूजा से आसपास का पूरा वातावरण भक्तिमय बना रहा, वहीं दूसरी ओर शहर के सुविख्यात कलाकारों की ओर से प्रस्तुत भक्तिपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम में गीत-संगीत की सुर सरिता बही। पूरे पूजनोत्सव के दौरान मिथिला के प्रसिद्ध शहनाई वादक बिलट राम की रसन चौकी भी खूब जमी। पहले दिन शहर के प्रसिद्ध संगीतज्ञ पं. बच्चन जी महाराज, विश्वनाथ गोस्वामी, हरेकनाथ गोस्वामी व अन्य कलाकारों की मंडली में शास्त्रीय गायन व भजन का सुरीला दौर जारी रखा। पूजनोत्सव के अगले दिन कटिहार से आयीं लोक गायिका प्रीति मिश्रा का गायन आकर्षण का केंद्र रहा। उन्होंने विद्यापति रचित जय-जय भैरवि... से शुरुआत की। इसके बाद श्यामा काली..., हम मैथिल छी मिथिला हमर..., नचारी गौरी के वर दिगंबर..., हमरा नै बिसरब कहियो सुनु दियर... आदि गीतों की झड़ी लगा दी। उनके अलावा सुप्रसिद्ध स्थानीय कलाकार गायक अरुण पाठक, करिश्मा प्रसाद, अनीश कुमार आदि ने भी भजन गाए। एक तरफ जहां ढाक ढोल और शहनाई की ध्वनि के साथ महाकाली के वैदिक मंत्र गुंजरित हो रहे थे, वहीं दूसरी ओर मैया की भक्ति के भजन गूंजते रहे। इसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर कार्यक्रम का आनंद उठाया। पूजनोत्सव की शुरुआत पार्थिव शिवलिंग पूजन, हनुमत ध्वज दान, वेद पाठ से हुई। इसके साथ ही कुमारि-बटुक भोजन, हवन-आरती सहित अन्य कार्यक्रम भी हुए। मंदिर परिसर की साज-सज्जा अपने-आप में ऐतिहासिक रही। बिजली बल्बों की जगमगाहट से अद्भुत नजारा बना रहा।

आचार्य व सहयोगीजन सम्मानित

इस क्रम में पूजन की सफलता में लगातार अथक योगदान करने वाले विद्वत आचार्यजनों को मुख्य रूप से सम्मानित किया गया। इनमें चंचल झा, गौरीशंकर झा, पं. गोविंद झा, डॉ. रणजीत कुमार झा, पं. बालशेखर झा, राधेश्याम झा बाऊ, ट्रस्ट के अध्यक्ष कृष्ण चन्द्र झा आदि शामिल रहे। आचार्यों को मैथिली कला मंच, काली पूजा ट्रस्ट के अध्यक्ष के सी झा, महामंत्री सुनील मोहन ठाकुर, पूजा संयोजक अविनाश अवि ने प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

ढाक-ढोल और शंख-ध्वनि से गूंजती रही वसुंधरा गली

इस्पात नगरी बोकारो के आध्यात्मिक अनुष्ठानों में नया आयाम जोड़ चुके वसुंधरा परिवार की ओर से लगातार दूसरे वर्ष आयोजित तीन-दिवसीय काली पूजनोत्सव का समापन प्रतिमा-विसर्जन के साथ हो गया। सेक्टर 3 बी स्थित वसुंधरा गली के समस्त आवास धारी श्रद्धालुओं ने मां काली की प्रतिमा का विसर्जन टू टैंक गार्डन में किया। उन्होंने मैया को अगले बरस जल्दी आने का न्योता देकर भावभीनी विदाई दी। इससे पहले, वसुंधरा परिवार की महिला सदस्यों ने मैया को सिंदूर समर्पित करने के बाद आपस में सिंदूर खेला किया। पहले दिन प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा, आवाहन एवं मध्यरात्रि के पश्चात निशा काल में मां काली की भव्य पूजा संपन्न की गई। मैया का पट खुलते ही पूरा वातावरण बांग्ला पद्धति की शंख ध्वनि और उलूक ध्वनि के बीच मां काली की जय- जयकार से गुंजायमान हो उठा। रातभर मैया के पूजन और उसके बाद हवन का कार्यक्रम चला। अगले दिन भी प्रातःकालीन पूजा संपन्न की गई और दिनभर माता के भजन-कीर्तन का दौर चला। वसुंधरा परिवार के बच्चों के लिए मनोरंजक स्पधाओं का आयोजन किया गया, जबकि धूमन-नृत्य में बच्चों के साथ-साथ बड़ों ने भी जमकर अपने हुनर दिखाए। लगातार तीन दिन तक ढाक-ढोल, घड़ी-घण्टा, शंखध्वनि और उलूक ध्वनि की गूंज बनी रही। पुरोहित के रूप में पंडित धनंजय चक्रवर्ती ने पूजन संपन्न कराया, जबकि मोहल्ले वासियों की ओर से यजमान के रूप में संजय चक्रवर्ती पूजा पर बैठे। भक्ति के साथ मनोरंजन के इस माहौल में वसुंधरा गली की साज-सज्जा भी अपने आप में अनूठी रही। टिमटिमाते बिजली बल्बों की चमक अपने-आप में एक अद्भुत छटा बिखेर रही थी। आयोजन को सफल बनाने में विजय कुमार झा, अर्जुन प्रसाद सिंह, बालेश्वर सिंह, धनंजय चक्रवर्ती, गिरिधर महतो, एसपी मिश्रा, बिप्लव दास, सतीश सिंह, विजय कुमार सिंह, तुलसी सिंह, संजय गोपाल, दीपक महतो, अंकिता चक्रवर्ती, अनामिका दास, विनोद कुमार, अशोक कुमार, मीना राज, संध्या सोनी, विकास कुमार, आशा रानी, लक्ष्मी देवी, मोनी आदि की अहम भूमिका रही।

वैदिक मंत्रोच्चार से गूंजता रहा मजदूर मैदान का इलाका

सेक्टर- 4 स्थित मजदूर मैदान में फ्रेंड्स क्लब की ओर से आयोजित छहदिवसीय महाकाली पूजनोत्सव का शुभारंभ हुआ। क्लब वर्ष 1972 से लगातार यहां महाकाली पूजनोत्सव का आयोजन करता रहा है। मैदान में हर साल की भांति इस बार भी भव्य मेला भी लगाया गया है। माँ काली पूजा समिति द्वारा आयोजित महाकाली पूजनोत्सव का उद्घाटन लगभग सात वर्षीय कन्या प्रियांशी कुमारी ने किया। मौके पर कृष्ण कुमार मुन्ना, उपेन्द्र सिंह, अरविंद राय, अखिलेश कुमार सिंह, सुशील कुमार, वर्तमान अध्यक्ष प्रभात कुमार, त्रिलोचन मिश्रा, धनजी, प्रकाश कुमार, ब्रजेश, चंदन, चीकू आदि उपस्थित थे।

बेरमो को जिला और जैनामोड़ को अनुमंडल बनाने का सपना अधूरा

उम्मीद... पेटरवार का चांदो भी नहीं बन पाया प्रखंड, लोगों में निराशा

मुन्ना दुबे

बोकारो : झारखंड अलग राज्य गठन होने के बाद से ही बोकारो जिले के बेरमो अनुमंडल की जनता में उम्मीद जगी थी कि बेरमो को जिला और जैनामोड़ को अनुमंडल तथा पेटरवार प्रखंड की 12 पंचायतों को मिलाकर चांदो को प्रखंड बनाया जाएगा। राज्य गठन के 23 साल पूरे होने को हैं लेकिन, जनता की यह मांग आज भी अधूरी है। बेरमो को जिला और जैनामोड़ को अनुमंडल तथा चांदो को प्रखंड बनाने का वादा सिर्फ चुनावी जुमला बनकर रह गया है। लोगों का तर्क है कि जब इससे कम जनसंख्या और क्षेत्रफल वाले इलाके में कई-कई जिला बनाया गया है तो बेरमो को क्यों नहीं जिला का दर्जा दिया जाय। बेरमो अनुमंडल में गोमिया, पेटरवार, कसमार, बेरमो, नावाडीह जरीडीह, चंद्रपुरा प्रखंड शामिल हैं तथा इसका क्षेत्रफल 45.22 वर्ग किलोमीटर है, जो राज्य के कई जिला रामगढ़, खूंटी, लोहरदगा आदि से भी अधिक है।

बेरमो अनुमंडल का बेरमो, फुसरो, चंद्रपुरा, कथारा, जरीडीह इलाका औद्योगिक व कोल माइंस वाला क्षेत्र है। गोमिया का ललपनिया, नावाडीह, बीटीपीएस, महुआटांड़, झुमरा पहाड़ आदि इलाका औद्योगिक व ग्रामीण इलाका है। बेरमो अनुमंडल क्षेत्र में कुल 22 थाना और ओपी हैं। विधि-व्यवस्था एवं विकास योजनाओं की सही मॉनिटरिंग के लिए बेरमो को जिला और जैनामोड़ को अनुमंडल तथा चांदो को प्रखंड बनाने की मांग लंबे समय से ग्रामीण कर रहे हैं। पिछले कई साल से बेरमो जिला बनाओ संघर्ष समिति ने सड़क से सदन तक धारदार आंदोलन भी किया है। लेकिन इसके बावजूद अब तक सरकार या प्रशासनिक स्तर पर कोई ठोस पहल नहीं हुई है।

सामाजिक कार्यकर्ता जीवन जगरनाथ, मनोज सिंह, सदानंद चटर्जी, सामाजिक कार्यकर्ता दिनेश सिंह एवं चेंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष संजय सिंह ने बताया कि बेरमो विधानसभा क्षेत्र में पड़ने वाले वाले पेटरवार की दस पंचायतों और जरीडीह की बारू एवं कसमार प्रखंड की सोनपुरा पंचायत को मिलाकर चांदो प्रखंड निर्माण की मांग के समर्थन में वर्षो से आंदोलन चलाया जा रहा है।

जनहित में 12 पंचायत और एक लाख की आबादी वाले चांदो को प्रखंड का दर्जा दिया जाना बहुत जरूरी है। इन 12 पंचायतों से प्रखंड मुख्यालय की अत्यधिक दूरी होने के कारण अपेक्षित विकास नहीं हो सका एवं विकास योजनाओं का सही मॉनिटरिंग भी नहीं हो पाती है। बेरमो को एक जिला बनने की जो अर्हता चाहिए, उसे बेरमो क्षेत्र पूरा भी करता है। लेकिन, न जानें क्यों, बेरमो को जिला बनाने की मांग पर सरकार उदासीन बनी हुई है। क्षेत्र के लोगों का कहना है कि यह मांग काफी पुरानी है।

यूटीएस ऐप को लेकर जागरुकता अभियान चला रहा रेलवे

संवाददाता

बोकारो : दक्षिण-पूर्व रेलवे, आद्रा मंडल में यात्रियों को अनारक्षित टिकट हेतु यूटीएस ऐप का अधिकाधिक उपयोग करने के लिए मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। भारतीय रेलवे द्वारा यात्रियों को बेहतर सुविधा प्रदान करने की दिशा में अनारक्षित टिकट लेने के लिए यूटीएस मोबाइल ऐप की व्यवस्था की गई है। यूटीएस ऐप एक मोबाइल टिकटिंग ऐप है, जो यात्रियों को अपने स्मार्टफोन पर अनारक्षित टिकट बुक करने की सुविधा प्रदान करती है। इससे यात्रियों को टिकट के लिए कतार में इंतजार करने की आवश्यकता नहीं होगी। इस क्रम में आद्रा मंडल के बोकारो स्टील सिटी तथा खानूडीह रेलवे स्टेशन पर जागरूकता अभियान चलाया गया और यूटीएस ऐप के उपयोग के प्रति यात्रियों को जागरूक किया गया। साथ ही यूटीएस ऐप में पंजीकरण, ऐप के माध्यम से अनारक्षित टिकट बुक करने, एप्प वॉलेट रिचार्ज करने आदि की जानकारी प्रदान की गई।

सहूलियत ऑनलाइन टूर मैनेजमेंट सिस्टम का शुभारंभ, एडवांस की सुविधा भी

त्वरित और पेपरलेस हुई बीएसएल कर्मचारियों की टूर प्रबंधन प्रणाली

संवाददाता

बोकारो : बोकारो स्टील प्लांट (बीएसएल) के कर्मचारियों के लिए ऑनलाइन टूर (दौरा) मैनेजमेंट सिस्टम शुरू किया जा रहा है, जिसमें वे टूर रिक्वेस्ट आवेदन ऑनलाइन जमा करते हुए टूर एडवांस के लिए भी आवेदन कर सकते हैं। इस नए ऑनलाइन सिस्टम का उद्घाटन अधिशासी निदेशक (वित्त एवं लेखा) सुरेश रंगानी तथा अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) राजन प्रसाद ने किया। इस दौरान मुख्य महाप्रबंधक (कार्मिक) हरिमोहन झा, मुख्य महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा) सुजय कुमार, मुख्य महाप्रबंधक (सी एंड आईटी) ए बंकिरा तथा इस सिस्टम को विकसित करने से जुड़ी टीम के सदस्य उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि इस नई प्रणाली का उद्देश्य टूर एडवांस की प्रक्रिया को पेपरलेस व त्वरित बनाना है। फिलहाल बीएसएल कर्मी इस प्रणाली के माध्यम से ऑनलाइन टूर एडवांस के लिए आवेदन कर सकते हैं। इसके अलावा, टूर सम्पन्न होने के पश्चात टूर बिल जमा करने और टूर बिलों की प्रतिपूर्ति और सेटलमेंट के लिए मॉड्यूल भी इस प्रणाली के तहत विकसित किया जा रहा है। जल्द ही मेडिकल रेफरल से संबंधित टूर आवेदन की सुविधा भी इस प्रणाली में शामिल करने की योजना है।

नव-विकसित प्रणाली पूरी तरह से ऑनलाइन, पारदर्शी एवं पेपरलेस है और कर्मी इससे रियल टाइम के आधार पर टूर और एडवांस की मंजूरी के बारे में अपडेट प्राप्त कर सकते हैं। इस सिस्टम में कर्मचारियों के टूर का पुराना डाटा भी उपलब्ध रहेगा। यह प्रयास बीएसएल में टूर एडवांस के लिए आवेदन की प्रक्रिया को और अधिक कुशल, त्वरित और पारदर्शी बनाने की दिशा में एक पहल है।

हफ्ते की हलचल

नेहरू जयंती पर देश के प्रथम प्रधानमंत्री को श्रद्धांजलि

बोकारो : स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री और आधुनिक भारत के मंदिरों के रूप में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की परिकल्पना करने वाले पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती के अवसर पर बोकारो स्टील सिटी में उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। बोकारो इस्पात संयंत्र के अधिशासी निदेशक बीरेंद्र कुमार तिवारी, सुरेश रंगानी, चितरंजन महापात्रा, राजन प्रसाद व पी के रथ, मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं प्रभारी बोकारो जनरल हॉस्पिटल डॉ बी बी करुणामय व मुख्य महाप्रबंधक (नगर प्रशासन) कुंदन कुमार सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने सेक्टर-5 और जवाहरलाल नेहरू जैविक उद्यान स्थित पंडित नेहरू की प्रतिमाओं को पुष्पांजलि दी।

डीपीएस बोकारो में 316 मेधावी विद्यार्थी किए गए सम्मानित

बोकारो : दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) बोकारो में गीत-संगीत व नृत्य प्रस्तुतियों की सतरंगी छटा उतरी रही। अवसर था विद्यालय के वार्षिकोत्सव एवं मेधावी विद्यार्थियों के सम्मान समारोह नक्षत्र का, जिसमें प्रतिभावान सितारे खूब चमके। इस अवसर पर शैक्षणिक सत्र 2022-23 में असाधारण प्रदर्शन के लिए कक्षा 6 से 11वीं के कुल 316 मेधावी विद्यार्थी सम्मानित किए गए। पढ़ाई में उत्कृष्ट अंक लाने के साथ-साथ सह-शैक्षणिक गतिविधियों में भी उम्दा प्रदर्शन के लिए विद्यार्थियों को ग्रीन बैज, ब्लू बैज और ब्लू ब्लेजर से नवाजा गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कोयला प्रक्षेत्र, बोकारो के पुलिस उप महानिरीक्षक (डीआईजी) पटेल मयूर कन्हैया लाल ने बारी-बारी से सभी बच्चों को सम्मानित किया। इसके अलावा, विद्यालय द्वारा अभिवंचित वर्ग के बच्चों के शिक्षार्थ संचालित दीपांश शिक्षा केंद्र के नन्हे विद्यार्थियों के बीच स्वेटर का वितरण भी किया गया।

जीवन में खुशियों की रोशनी बिखेरती है दिवाली : अमरदीप

बोकारो : बोकारो इस्पात नगर के सेक्टर-12 ए स्थित बिरसा मुंडा निःशुल्क विद्यालय परिसर में दिवाली को लेकर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समाजसेवी कुमार अमरदीप ने कहा कि दिवाली जीवन में खुशियों की रौशनी बिखेरती है। यह भारतीय सभ्यता व संस्कृति का परिचायक है। दिवाली बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। प्रभु श्रीराम चौदह वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या पहुंचे। लोगों ने अपने घरों में दीप जलाया। उन्होंने आपस में खुशियां बांटीं। समाजसेवी कुमार अमरदीप ने विद्यार्थियों को मोमबत्ती दिया। मौके पर परशुराम राम, ममता सिंह, गुड़िया देवी, विजय कुमार, बबीता कुमारी, माधुरी देवी, पन्ना देवी, प्रेम सिंह वेद, जितेंद्र कुमार, अजय कुमार आदि उपस्थित थे।

मधुमेह दिवस पर रोटरी ने कराई 108 लोगों की जांच

बोकारो : रोटरी क्लब ऑफ बोकारो स्टील सिटी ने विश्व मधुमेह दिवस के अवसर पर एक मधुमेह जांच शिविर लगाया। यह शिविर रोटरी के पॉजिटिव हेल्थ प्रोजेक्ट के नो योर नंबर कार्यक्रम के अंतर्गत सिटी सेन्टर स्थित कैनरा बैंक के प्रांगण में लगाया गया। शिविर में बैंक के ग्राहकों के साथ आने-जाने वाले सभी राहगीरों, दुकानदार, सेल्समैन एवं अन्य का निःशुल्क ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर, पल्स रेट, ऑक्सीजन लेवल, वजन, ऊंचाई इत्यादि की जांच की गई। रांची से आए मधुमेह विशेषज्ञ डॉ. हर्ष कुमार द्वारा उचित परामर्श भी दिया गया। क्लब के निदेशक-स्वास्थ्य डॉ आर. एन. प्रधान ने बताया कि विश्वभर में मधुमेह एक भयानक बीमारी बनती जा रही है। अगर इसकी कारगर तरीके से रोकथाम नहीं की गई तो अगले दशक तक भारत विश्व का मधुमेह की राजधानी बन जाएगा। रांची से आए मधुमेह परामर्शदाता डॉ हर्ष कुमार ने कहा कि अगर शुरुआती दौर में मधुमेह का उचित उपचार नहीं हुआ तो यह भयंकर रूप ले सकती है, जो हृदय, लीवर, आंख इत्यादि को नुकसान पहुंचाती है। क्लब के अध्यक्ष घनश्याम दास ने कहा कि मधुमेह शरीर के प्रत्येक अंग को नुकसान पहुंचाती है। इसकी जितनी जल्दी पहचान कर ली जाए और उपचार शुरू हो जाए तो भविष्य में इसकी जटिलता से बचा जा सकता है। शिविर के अंत में सचिव महेश गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापन किया। शिविर में करीब 108 व्यक्तियों की जांच हुई। कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ प्रधान, घनश्याम दास, महेश गुप्ता, अशोक तनेजा, राज कुमार गुप्ता, आलोक रस्तोगी, प्रदीप नारायण, नीलम दास आदि उपस्थित थे।

अनीतीश के बिगड़े बोल... विपक्ष को मिला बड़ा मुद्दा, अपने भी अब दिखा रहे आईना

विशेष संवाददाता

पटना : सियासी जगत के सबसे बड़े पलटू के नाम से प्रसिद्ध नीतीश कुमार ने जिस प्रकार अपने बिगड़ैल बोल से अपनी अनैतिक छवि पेश की है, उससे समूचा बिहार और राजनीतिक-लोक शर्मिंदा है। जनसंख्या नियंत्रण के मुद्दे पर लोकतंत्र के मंदिर विधानसभा में जिस प्रकार उन्होंने अभद्रतम टिप्पणी की, उससे हर तरफ उनकी जगहंसाई हो रही है। होनी भी चाहिए। इससे जहां विपक्ष को एक बड़ा मुद्दा मिल गया है। बिहार विधानमंडल का शीतकालीन सत्र भले ही खत्म हो गया है, लेकिन विधानसभा और विधान परिषद में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की ओर से दिए गए बयान पर शुरू हुआ बवाल अभी खत्म नहीं हुआ है। जनसंख्या नियंत्रण पर मुख्यमंत्री का भाषण और फिर पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी के ऊपर की गई टिप्पणी को लेकर एनडीए के घटक दल बड़ा राजनीतिक मुद्दा बनाने की कवायद में जुट गए हैं।

अपनों का भी साथ नहीं

वहीं दूसरी ओर अपने भी उनका साथ देते नहीं दिख रहे। वह अपने ही बयानों की वजह से सवालों के घेरे में नजर आ रहे हैं। विपक्षी भाजपा ने तो नीतीश को आड़े हाथों लिया है, अब उन्हें अपनों का भी साथ नहीं मिल रहा है। उनके दो बयानों की वजह से बिहार में जदयू के सहयोगी भी असहज महसूस कर रहे हैं। जानकारों का कहना है कि उनके दो बयानों ने अबतक के सारे किए-धरे पर पानी फेरने का काम किया है। नीतीश कुमार को एक तरफ कांग्रेस नसीहत दे रही है तो दूसरी तरफ उनकी पार्टी ने उन्हें कुछ दिन मीडिया से दूर रहने को कहा है। आरजेडी के विधायक सुधीर सिंह ने भी नीतीश कुमार के महिलाओं वाले बयान और जीतनराम मांझी पर की गई टिप्पणी को गलत ठहराया है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष ने भी नीतीश की भाषा पर सवाल खड़े कर दिए।

नीतीश के खिलाफ राज्य भर में चलेगा अभियान

एनडीए में शामिल चिराग पासवान की पार्टी लोजपा (राम विलास) पटना से लेकर राज्य के सभी जिलों और गांव-गांव तक नीतीश सरकार के खिलाफ अभियान चलाने की तैयारी कर रही है। खबरों की मानें तो पूर्व केंद्रीय मंत्री उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी राष्ट्रीय लोक जनता दल छठ के बाद से लोकसभा चुनाव तक नीतीश कुमार के बयानों को लेकर जनता के बीच जाने की तैयारी कर रहा है। पूर्व केंद्रीय मंत्री उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी राष्ट्रीय लोक जनता दल के प्रदेश प्रवक्ता राम पुकार सिन्हा के अनुसार त्योहार खत्म होते ही उनकी पार्टी नीतीश कुमार के खिलाफ ठोस प्लान के साथ राज्यभर में अभियान चलाएगी। उन्होंने कहा- पति-पत्नी के बीच के संबंध को जिस तरह से सदन में महिलाओं के बीच मुख्यमंत्री ने कहा, वह महिलाओं का अपमान है। इसी प्रकार महादलित समाज से आने वाले पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी के खिलाफ जो बातें कही गई, वह भी शर्मनाक है। लोकसभा चुनाव में पार्टी और एनडीए में शामिल सभी घटक दल इसे मुद्दे को उठाएगा।

नीतीश का असल चेहरा उजागर, सड़क से सदन तक होगा विरोध

लोजपा (रामविलास) के प्रदेश प्रवक्ता प्रो. विनीत कुमार ने कहा कि नीतीश कुमार का असल चेहरा अब दुनिया देख चुकी है। उन्होंने मुखौटा पहन रखा था। अब महिला और दलित-विरोधी उनका रूप दुनिया देख चुकी है। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार को हमारी पार्टी ऐसे ही नहीं छोड़ने वाली है। सदन से सड़क तक हम अपना विरोध करेंगे। अब पंचायत से राज्य स्तर पर नीतीश कुमार का विरोध करेंगे। देश की जनता को भी नीतीश कुमार की हरकत से अवगत कराएंगे, ताकि लोकसभा और विधानसभा चुनाव में जनता सतर्क रहे। छठ पूजा के बाद इसके लिए व्यापक स्तर पर रणनीति तैयार की जाएगी। आरएलजेडी के प्रदेश प्रवक्ता ने नीतीश के मानसिक संतुलन पर भी सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि साजिश के तहत नीतीश कुमार के राजनीतिक हैसियत को खत्म करने में लगे हैं।

साहित्य सम्मेलन में दीपोत्सव... प्रेम और सद्भाव के लिए की गयी प्रार्थना

संवाददाता

पटना : कदमकुआं स्थित बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन में सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ की उपस्थिति में उत्साह-पूर्वक दीपोत्सव मनाया गया तथा बिहार समेत संपूर्ण संसार में प्रेम और सद्भाव की वृद्धि के साथ सुख-समृद्धि के लिए महालक्ष्मी से प्रार्थना की गयी।

इस अवसर पर अपने उद्गार में डॉ. सुलभ ने कहा कि भगवान श्रीराम लंका-विजय के पश्चात इसी दिन अर्थात कार्तिक अमावस्या की संध्या अयोध्या वापस लौटे थे। उनके आगमन की प्रसन्नता में संपूर्ण अयोध्या में दीप-वल्लरियां बिछाई गयी थीं, जिसने समस्त अंधकार को दूर कर दिया था। अयोध्या में मनाए गए उसी दीपोत्सव के प्रतीक-स्वरूप संपूर्ण भारत वर्ष में दीपावली की परंपरा आरम्भ हुई। कालांतर में इस दिव्योत्सव में लौकिक समृद्धि, जीवन में प्रसन्नता और सुख-शांति के लिए धन और समृद्धि की देवी श्री महालक्ष्मी के पूजन की परंपरा भी जुड़ गयी।

डॉ. सुलभ ने कहा कि वस्तुतः यह पर्व असत्य पर सत्य के विजय के उत्सव के साथ अंधकार पर प्रकाश के विजय के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। सूक्ष्म रूप में इस पर्व का निहितार्थ प्रत्येक मनुष्य के अंतर में स्थित दीप का प्रज्ज्वलन है, कि जिससे मानव का अंतर और बाह्य-जगत दोनों ही प्रकाशवान रहे। जीवन दिव्यता से परिपूर्ण और प्रेम तथा खुशियों से भरा हो। दुःख और विकार रूपी सभी अंधकार नष्ट हो जाएं तथा जीवन लोक-मंगलकारी बने। संपूर्ण मानव-जाति समस्त प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व के सिद्धान्त पर प्रेम और सद्भाव पूर्ण जीवन यापन करे। इस दीपोत्सव में सम्मेलन के अधिकारियों ने मोमबत्ती जलाकर प्रकाश का आह्वान किया। सम्मेलन के प्रबंधमंत्री कृष्ण रंजन सिंह, भवन अभिरक्षक डॉ. नागेश्वर यादव, प्रशासी पदाधिकारी सूबेदार नन्दन कुमार मीत, अमरेन्द्र कुमार, दिगम्बर जायसवाल, बीरेन्द्र प्रसाद, महेश प्रसाद आदि सम्मेलन कर्मी उपस्थित थे।

प्रोन्नति को ले सीएम को घेरेंगे चतुर्थवर्गीय सरकारी कर्मचारी

संवाददाता

बोकारो : प्रोन्नति सहित अपनी छह सूत्री मांगों को लेकर झारखंड राज्य चतुर्थवर्गीय सरकारी कर्मचारी आगामी 22 नवंबर को राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का घेराव करेंगे। इस निर्णय को लेकर एक बैठक संघ के जिला मंत्री को प्रेम शंकर राम की अध्यक्षता में हुई। बताया गया कि सहदेव प्रसाद कुशवाहा, राज्य अध्यक्ष एवं सपन कुमार कर्मकार, महामंत्री झारखण्ड राज्य चतुर्थवर्गीय सरकारी कर्मचारी संघ के आह्वान पर 22 नवम्बर को ज्वलंत जायज एवं वाजिब मांगों को लेकर मुख्यमंत्री, झारखण्ड सरकार के आवास का विशाल रैली के माध्यम से घेराव कर अपनी मांग संबंधी संलेख सीएम को वे समर्पित करेंगे। चतुर्थवर्गीय कर्मचारियों से संबंधित ज्वलंत मांगों को अविलंब पूरा करने को लेकर राज्य के पांचों प्रमण्डलों व सभी 24 जिलों के चतुर्थवर्गीय कर्मचारी इसमें शामिल होंगे। महामंत्री सपन कुमार कर्मकार ने इस संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि झारखण्ड सरकार के तमाम विभागों में कार्यरत नियमित चतुर्थवर्गीय कर्मियों को को वरीयता एवं योग्यता के आधार पर तृतीय वर्ग के पद पर एकमुश्त पदोन्नति दी जाय। झारखंड राज्य गठन के बाद से चतुर्थवर्गीय कर्मियों की वर्ग 4 से वर्ग 3 में पद प्रोन्नति लंबित है। 10 वर्षों की सेवा के उपरान्त चतुर्थवर्गीय कर्मियों को ग्रेड पे 2400 रुपये देने सहित अन्य मांगें भी लंबित हैं।

वर्ल्ड क्लास एक्यूपंक्चर स्पाइन स्पेशलिस्ट के रूप में सम्मानित हुए डॉ. राजेंद्र हाजरा

आमिषा पटेल ने किया सम्मानित

विशेष संवाददाता

रांची : स्पाइन चिकित्सा के क्षेत्र में झारखंड का गौरव बने चुके रांची निवासी सुविख्यात एक्यूपंक्चर विशेषज्ञ डॉ. राजेन्द्र कुमार हाजरा की उपलब्धियों में एक और नया आयाम जुड़ गया है। नई दिल्ली में डॉ. हाजरा को एक बार फिर वर्ल्ड क्वास एक्यूपंक्चर स्पेशलिस्ट के रूप में सम्मान मिला। प्रमुख ब्रांडिंग एजेंसी क्राफ्टवर्ल्ड इवेंट्स की ओर से हाल ही में देशभर के उल्लेखनीय व्यक्तियों और व्यवसाय-जगत से जुड़े लोगों को इंडिया बिज अचीवर्स अवार्ड्स 2023 में उनकी असाधारण उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रसिद्ध बॉलीवुड अभिनेत्री गदर फेम अमीषा पटेल ने डॉ. हाजरा को सम्मानित किया और उन्हें अधिक ऊंचाइयों के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। उन्हें वर्ल्ड क्लास एक्यूपंक्चर स्पाइन स्पेशलिस्ट आफ द ईयर 2023 के सम्मान से नवाजा गया। उल्लेखनीय है कि इसके पूर्व भी डॉ. हाजरा को दिल्ली में वर्ल्ड क्लास एक्यूपंक्चर स्पाइन स्पेशलिस्ट 2023 का सम्मान यूपे के राज्यमंत्री ठाकुर रघुराज सिंह, फिल्म अभिनेत्री जया प्रदा, अभिनेता अरबाज खान आदि के हाथों मिला था।

सूर्य ही जीवन तत्व को जागृत करने वाले देव

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली-

नवग्रहों में सूर्य ही प्रधान ग्रह देव हैं। सूर्य के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। सूर्य ही जीवन तत्व को अग्रसर करने वाला, उसे चैतन्य बनाने वाला, प्रकाश देने वाला मूल तत्व है। मनुष्य का शरीर अपने आप में सृष्टि के सारे क्रम को समेटे हुए हैं और जब यह क्रम बिगड़ जाता है तो शरीर में दोष उत्पन्न होते हैं, जिसके कारण व्याधि, पीड़ा, बीमारी का आगमन होता है। इसके अतिरिक्त शरीर की आंतरिक व्यवस्था के दोष के कारण मन के भीतर भी दोष उत्पन्न होते हैं, जो कि मानसिक शक्ति, इच्छा की हानि पहुंचाते हैं। व्यक्ति की सोचने-समझने की शक्ति, बुद्धि क्षीण होती है। इन सब दोषों का नाश सूर्य तत्व को जागृत कर किया जा सकता है। क्या कारण है कि एक मनुष्य उन्नति के शिखर पर पहुंच जाता है और एक व्यक्ति पूरे जीवन सामान्य ही बना रहता है? दोनों में भेद शरीर के अंदर जागृत सूर्य तत्व का है। नाभि चक्र सूर्य चक्र का उद्गम स्थल है और यह अचेतन मन के संस्कार तथा चेतना का प्रधान केंद्र है, शक्ति का स्रोत बिंदु है। साधारण मनुष्य में यह तत्व सुप्त होता है, न तो उनकी शक्ति का सामान्य व्यक्ति को ज्ञान होता है और न ही वह इसका लाभ उठा पाता है। इस तत्व को, अर्थात भीतर के मणिपुर सूर्य चक्र को जागृत करने के लिए बाहर के सूर्य तत्व की साधना आवश्यक है। बाहर का सूर्य अनंत शक्ति का स्रोत है और इसे जब भीतर के सूर्य चक्र से जोड़ दिया जाता है तो साधारण मनुष्य ही अनंत मानसिक शक्ति का अधिकारी बन जाता है। ... और जब यह तत्व जागृत हो जाता है तो बीमारी, पीड़ा, बाधाएं उस मनुष्य के पास आ ही नहीं सकती हैं।

ब्रहेश नाच्चुतेशाय सूर्याय आदित्य वर्चसे
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः

हे सूर्यदेव! आप ब्रह्मा, विष्णु और महेश के ईश हैं। सौर मंडल में आपकी ही द्युति है, वह आपसे ही प्रकाशित है। सर्वभक्षी, रौद्र रूप धारण करने वाली अग्नि आपका ही रूप है और आपके उग्र रूप को नमन है।

इस श्लोक द्वारा सूर्य की स्तुति करते हुए श्रीराम उन्हें नमन कर रहे हैं। प्रसंग है कि रावण से युद्ध करते-करते श्रीराम थक गये और उस समय उस युद्ध को देखने आये महर्षि अगस्त्य ने श्रीराम में नव ऊर्जा का संचार करने के लिए उन्हें सूर्य की स्तुति, आदित्य हृदय स्तोत्र के माध्यम से करने की आज्ञा दी और उसे करने के उपरांत श्रीराम युद्ध में विजयी हुए।

जीवन में चुनौतियां आती हैं और उनसे संघर्ष करने की ऊर्जा सूर्य प्रदान करते हैं। इसीलिए आरंभ से सूर्य पूज्य हैं। ऋग्वेद में सूर्य के संदर्भ में कहा गया है- 'सूर्य आत्मा जगत्सतथुवश्च।'

इस जगत के कण-कण में ईश्वर का निवास है। इसका तो सीधा सा अर्थ यही निकलता है कि इस जगत के ईश्वर सूर्य हैं। सूर्य ही जगत की आत्मा है। ईशावास्य उपनिषद में सूर्यदेव की स्तुति पुरुष रूप में की गई है-

'पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापात्य व्यूह रश्मीन्समूह तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि'

हे पुष्टि देने वाले, ऋषियों में अनोखे नियम वाले, प्रजाओं के पति सूर्यदेव, आपकी किरणों का समूह चारों ओर फैल रहा है, जिस कारण आप प्रकृति ही मालूम पड़ रहे हैं। अपनी किरणों का मायाजाल समेटिये, जिससे मैं आपके पुरुष रूप का दर्शन कर पाऊं।

19-20 नवम्बर, 2023 : छठ महापर्व पर विशेष

उपनिषद् काल की यह प्रार्थना सूर्य षष्ठी पूजा में, जिसे छठ पूजा भी कहते हैं, में साकार हो जाती है। बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में छठ पूजा अत्यधिक श्रद्धा और भक्ति से उगते हुए और अस्त होते सूर्य को अर्घ्य देकर मनायी जाती है। गौर करने की बात यह है कि सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य अपनी किरणें समेट लेते हैं। इस पूजा में पुरुष रूप में सूर्य को दीनानाथ और स्त्री रूप में छठी मैया कहकर संबोधित किया जाता है। छठी मैया सूर्यदेव की बहन भी मानी गई हैं।

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्करः

आदि, यानी जहां से कहानी शुरू हुई, सूर्य के कारण ही सृष्टि फल-फूल रही है, बारिश अपने नियत समय पर होती है, पौधे उगते हैं, अन्न पकता है, वायु चलती है, धरती उपजाऊ होती है। जिन पंच महाभूतों से ब्रह्मांड रचा गया है- धरती, आकाश, वायु, अग्नि और जल, उन सबका संचालन सूर्य करते हैं और अग्नि सूरज का ही अंश है। इस कारण से वेद में सूर्य को पहला रुद्र (हिरण्यगर्भ) कहा गया है। इसी हिरण्य (प्रज्वलित) गर्भ में संसार स्थित है और यह हिरण्यगर्भ तीनों लोकों (भूः, भुवः और स्वः) में स्थित है। भूः का अर्थ है यह पृथ्वी लोक, भुवः का अर्थ है अंतरिक्ष लोक और स्वः का अर्थ है स्वर्ग लोक। गायित्री मंत्र में इन तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाले सूर्य से प्रार्थना की गई है और श्री सूक्त में अग्निदेव सूर्य से हिरण्यवर्णा तपे स्वर्ण के समान वर्ण वाली लक्ष्मी का आह्वान किया गया है।

सूर्य उपासना के लाभ

सूर्यदेव सभी प्राणियों के पोषक, दिवा-रात्रि और ऋतु परिवर्तन के कारक हैं। विभिन्न व्याधियों के विनाशक हैं। सूर्य को धन्यवाद देने के लिए ऋषियों ने दिन की शुरूआत सूर्य नमस्कार से करने का नियम स्थापित किया, जिससे कि मनुष्य, जगत प्राण (सूर्य) को अपनी कृतज्ञता प्रकट कर सकें और उनके जीवन में भी सूर्य के समान तेजस्विता स्थापित हो सके। देवताओं की कृपा से ही उनका जीवन सुचारु रूप से चल रहा है।

1. आरोग्य भास्करादिच्छेत

सूर्य साक्षात् देव हैं। वे आरोग्य प्रदाता हैं। अथर्ववेद में वर्णित है कि सूर्य की किरणें हृदय की दुर्बलता, कुष्ठ रोग आदि को दूर करती हैं। पौराणिक ग्रंथों में ऐसा वर्णन है कि श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब को महर्षि दुर्वासा के श्रापवश कुष्ठ रोग हो गया था और तब श्रीकृष्ण ने साम्ब को सूर्य की पूजा करने का निर्देश दिया, जिससे उनका रोग समाप्त हो गया।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी मानता है कि सूर्य की किरणें विटामिन डी का श्रेष्ठतम स्रोत हैं और यह विटामिन अस्थियों को दृढ़ करता है और डिप्रेशन को दूर करने में सहायक है। और तो और, विटामिन डी आपके हृदय की कार्य प्रणाली को भी सुचारू रूप से गतिशील रखता है।

2. चक्षो सूर्यो जायत-यजुर्वेद

सूर्य नारायण जगत के नेत्र हैं। चाक्षुषी विद्या का श्रद्धापूर्वक पाठ करने पर नेत्र रोगों का नाश होता है और नेत्र ज्योति में वृद्धि होती है।

3. आयु प्रदाता एवं वैभवदाता

यजुर्वेद में ऐसी प्रार्थना का उल्लेख है, जिसमें सूर्यदेव से कामना की गयी है कि हम सौ शरद ऋतु देखें, सौ वर्ष जीएं और कभी दरिद्र नहीं हों। ऐसी कथा है कि महाभारत काल में जब पांडव वनवास में भूख-प्यास से पीड़ित थे, तब युधिष्ठिर ने सूर्यदेव के 108 नामों का जप किया, जिससे प्रसन्न होकर सूर्यदेव ने युधिष्ठिर को अक्षय पात्र दिया, जिसमें रखा भोजन कभी समाप्त नहीं होता था।

4. तमोऽरिं सर्वपापघ्नं

सूर्यदेव की साधना से शत्रु का नाश संभव हो जाता है। जब श्रीराम भी रावण से युद्ध करते हुए थक गए तो उन्होंने भी आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ किया तथा युद्ध में विजय प्राप्त की और कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन ने भी श्रीकृष्ण की आज्ञा मानकर सूर्य स्तोत्र का जप किया और युद्ध के लिए तत्पर होकर विजय प्राप्त की। वैदिक ऋषि सूर्य से प्रार्थना करते हैं कि ह्यआप हमारी बुराइयों और पापों को नष्ट करें एवं मंगल का पथ प्रशस्त करेंह्न फिर हम क्यों सूर्य कृपा से वंचित रहें?

सूर्य से ही पृथ्वी पर जीवन है, प्रकाश है। हमारी आत्मा में जो प्रकाश है, वह भी सूर्य का ही प्रतिबिम्ब है और सूर्य की इस जगत के प्रति अभूतपूर्व संवेदना है। जिस दिन सूर्योदय नहीं होता, उस दिन पूरी सृष्टि की लय टूट जाती है। सूर्य साधना द्वारा आप जगत की आत्मा (ब्रह्म) से जुड़ते हैं और वह क्षण जीवन को महानता की ओर ले जाता है।

लोक आस्था का पर्व 'छठ' - सूर्य षष्ठी पर्व

छठ महोत्सव मात्र एक उत्सव न होकर एक तपस्या है। तीन दिनों तक चलने वाले इस पर्व में व्रती सूर्य नारायण के समक्ष उनकी प्रसन्नता हेतु कठिन व्रत रखकर अत्यंत कठिन नियमों का पालन करते हुए तपश्चर्या करते हैं। यह सृष्टि तप के प्रभाव से ही चल रही है। उपनिषद्कारों ने तप को क्रिया का उग्रतम रूप माना है और सृष्टि के आरंभ से सूर्य क्रियारत हैं। प्रतिदिन निश्चित समय पर उदित होते हैं और जब उनके अस्त होने का आभास होता है, उस समय वह कहीं और उदित हो रहे होते हैं। सूर्य तेजस्विता साधना संपन्न करने का श्रेष्ठतम मुहूर्त्त छठ का दिन है, क्योंकि तप में जब साधना का बल आता है, तब वह सौ गुना प्रभावी हो जाता है। **(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)**

कई परेशानियों से राहत देती है लौंग, जानिए फायदे

भोजन को स्वादिष्ट बनाने वाले मसालों में से एक लौंग के स्वाद के ही नहीं, सेहत के भी साथी हैं। सेहत से जुड़ीं कई परेशानियों को लौंग से ठीक किया जा सकता है। लौंग का इस्तेमाल खाने के साथ चाय को स्वादिष्ट बनाने में भी किया जाता है। लौंग के कई फायदे हैं, आइए जानते हैं-

दांत दर्द - लौंग खाने से दांत का दर्द ठीक होता है। लौंग में दर्द को शांत करने वाले गुण पाए जाते हैं। ऐसे में अगर आपके दांत में दर्द हो तो लौंग को अपने दांत के बीच में दबाकर रखें।

इंफेक्शन - लौंग संक्रमण (इंफेक्शन) को दूर करता है। इसमें एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-माइक्रोबियल गुण होते हैं। इसका मतलब है कि यह बैक्टीरिया या अन्य सूक्ष्मजीवों से होने वाले संक्रमण से बचाव प्रदान कर सकता है। स्किन पर कहीं इंफेक्शन होने पर उस जगह पर लौंग का पेस्ट लगाने की सलाह दी जाती है।

एसिडिटी - अम्लता यानी एसिडिटी में लौंग राहत देती है। सुबह खाली पेट लौंग के सेवन करने से पाचन संबंधी समस्या दूर हो जाती है। लौंग पाचन एंजाइम के स्राव को बढ़ाते हैं, जो डाइजेशन प्रॉलस को रोकने या ठीक करने में कारगर हैं।

पिंपल्स- पिंपल्स को ठीक करने में कारगर आपको अगर ऑयली स्किन की वजह से चेहरे पर पिंपल्स हो जाते हैं, तो आपको लौंग का पेस्ट एलोवेरा जेल में डालकर पिंपल्स पर लगाना चाहिए। इससे फायदा होता है।

मुंह की बदबू - आपके मुंह से अगर सुबह उठने पर बदबू आती है या मसूड़ों में दर्द रहता है, तो आप रोजाना एक लौंग को अपने मुंह में दबा लें, इससे धीरे-धीरे मुंह से बदबू आनी बन्द हो जाएगी।

पेट का अल्सर- पेट के अल्सर के इलाज में लौंग काफी मदद कर सकता है। यह अल्सर आमतौर पर पेट की से टी लेयर के कम हो जाने के कारण हो जाते हैं, जिसमें लौंग खाने से फायदा होता है। - **प्रस्तुति : शशि**

'शंखनाद'- मानवीय जिजीविषा एवं संघर्ष की महागाथा

पुस्तक समीक्षा

- डॉ. उमेश कुमार शर्मा

'शंखनाद' उपन्यास हिन्दी के चर्चित कथा- शिल्पी रामबाबू नीरव का पाँचवाँ उपन्यास है। अपने कलेवर में यह उपन्यास सामान्य है, परंतु इसका कथ्य अत्यंत विराट और समसामयिक है। यह उपन्यास निश्चय ही प्रभावोत्पादक है। कारण, अपनी इस रचना में उपन्यासकार एक ओर इक्कीसवीं शती के तीसरे दशक में बढ़ रहे भूमंडलीकरण और बाजारवाद के प्रसार तथा उससे उत्पन्न संकटों की ओर इसका इशारा करते हैं, वहीं दूसरी ओर एक आम आदमी की अदम्य जिजीविषा तथा अनवरत संघर्ष का महाआख्यान प्रस्तुत करते हैं। 'शंखनाद' न सिर्फ सत्ता और व्यवस्था के खिलाफ आम आदमी का प्रतिरोध है, वरन् यह समकालीन राज और समाज का यथार्थपूर्ण तथा जीवंत इतिहास भी है। दरअसल, ऐसी ही साहित्यिक रचना एक निश्चित समय के बाद अपने समय का इतिहास बन जाता है। रचनाकार रामबाबू नीरव भारतीय समाज की जटिल संरचना से बखूबी परिचित हैं। खासकर, ग्रामीण समाज से जुड़े होने के कारण उनकी दृष्टि प्रेमचन्द की भाँति व्यापक है। वे जिस समाज में पले-बढ़े हैं, वह समाज अनायास ही उनकी रचनाओं में जीवंत हो उठा है। वैसे भी साहित्य और समाज में गहरा अंतर्संबंध होता है। किसी भी साहित्य को उसके सामाजिक परिप्रेक्ष्य में ही समझा जा सकता है या उसका मूल्यांकन किया जा सकता है। साहित्य को समाज का दर्पण मानने की परंपरा रही है, परंतु मैं तो समझता हूँ कि 'शंखनाद' जैसी साहित्यिक रचना समाज का दर्पण मात्र नहीं हो सकता, जो व्यक्ति और समाज का वास्तविक प्रतिबिंब मात्र दिखलाता हो। अगर यह सत्य होता तो यह केवल सामाजिक दस्तावेज बनकर रह जाता, जबकि ऐसा नहीं है। यह उपन्यास उससे आगे बढ़कर हमारे सामने एक नये आदर्श को प्रस्तुत करता है। हमारे अंतस में परिवर्तन की चेतना उत्पन्न करता है और बतलाता है, हमें कैसा होना चाहिए! यह उपन्यास किसी भी पारंपरिक अवधारणाओं का या राजनीति का पिछलग्गू नहीं बनता। प्रेमचन्द ने ठीक ही कहा है- 'साहित्य राजनीति का पिछलग्गू नहीं है, वह आगे-आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।' 'शंखनाद' सच में हमारे सामने श्रेष्ठतम आदर्शों को

उपस्थापित करता है, जिसका अनुकरण कर सर्वोत्तम मानव समाज का निर्माण किया जा सकता है। उपन्यास की कथा पूर्वदीप्त शैली में वहाँ से आरंभ होती है, जहाँ नायक विजयकांत दिल्ली के तिहार जेल में बंद है। यहाँ स्पष्ट होता है कि वह पुपरी, सीतामढ़ी का निवासी है और भयावह बाढ़ की विभीषिका से तबाह होकर रोजी- रोजगार की तलाश में दिल्ली आया है। भटकाव की स्थिति में उसकी मुलाकात बिहार के ही एक पुलिस इंस्पेक्टर बी. एन. तिवारी से होती है। वे ही विजयकांत को हनुमान मंदिर के पुजारी और मानवतावादी संत बाबा निर्भयानंद से मिलवाते हैं। बाबा की कृपा से उसे रहने-खाने का ठिकाना मिल जाता है। वह बाबा का भक्त बन जाता है और वहीं से अपने संघर्ष की शुरुआत करता है। बाद में उनकी मुलाकात सब्जी बेचने वाली रूपाली से होती है जो कि आई. ए. एस. की तैयारी कर रही है। साथ ही जेल में वह कर्मठ पत्रकार अमृता कौर के संपर्क में आता है जो कि पत्रकारिता की महत्ता और सामर्थ्य को बखूबी समझती है। रूपाली और अमृता के साथ मिलकर विजय सदैव असत्य और अन्याय के खिलाफ संघर्ष करता है और इसी क्रम में झोपड़पट्टी की जमीन पर एक कंपनी (डीडीए) कब्जा जमाना चाहता है, जिसे बचाने के लिए रूपाली स्थानीय विधायक रूपचंद बंसल से मिलने जाती है। पर रक्षक के नामक पर भक्षक बना विधायक उसके साथ बलात्कार की कोशिश करता है। इसी बीच विजयकांत पहुँचकर उसकी रक्षा करता है। यह अलग बात है कि इसी कारण विजयकांत को गलत मुकदमे में फंसाकर जेल में बंद कर दिया जाता है।

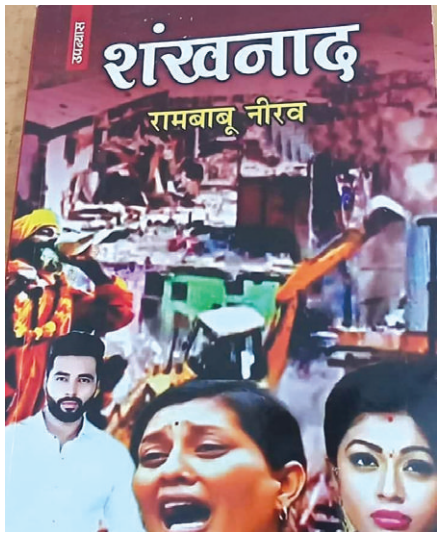

इधर, रूपाली आईएएस बनने में सफल हो जाती है और उधर अमृता के प्रयास से विधायक तथा भ्रष्ट आफिसर बेनकाब कर दिये जाते हैं। जमीन पर अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाले लोगों के साथ रूपाली सबसे आगे है। आखिरकार उनपर गोली चलायी जाती है, जो कि बाबा निर्भयानंद को लगती है। बाबा निर्भयानंद शहीद हो जाते हैं, परंतु अमृता और विजयकांत के सहयोग से अंततः रूपाली की जीत होती है। जमीन पर उसका मालिकाना हक सिद्ध हो जाता है। रूपाली की इस जीत में विजयकांत और अमृता कौर बराबर की भागीदार हैं। इस तरह कथावस्तु की दृष्टि से यह उपन्यास सुखांतक है। चूँकि निरंतर संघर्ष करने वाले सभी सद्पात्रों को उनके अभीष्ट की प्राप्ति हो जाती है। 'शंखनाद' उपन्यास की कथावस्तु को दृष्टि में रखते हुए यह निश्चय ही कहा जा सकता है कि रामबाबू नीरव ने अपनी इस औपन्यासिक कृति के माध्यम से अत्यंत सजगतापूर्वक एक ओर भूमंडलीकाण और बाजारवाद के दुष्प्रभावों को रेखांकित किया है, वहीं दूसरी ओर अपराध और राजनीति के सांठगांठ को उजागर कर दिया है।

इस उपन्यास की सबसे बड़ी खासियत है कि उपन्यास के सभी मुख्य पात्र मानवीय संभावनाओं के उत्कर्ष तक पहुँचता है। वे सभी पात्र समस्याओं के बीच जीने का मार्ग खोज लेते हैं तथा सफलता पाने तक संघर्ष करते रहते हैं। उपन्यास में चार पात्र नायक विजयकांत, नायिका रूपाली, सहनायिका अमृता कौर तथा मानवतावादी संत बाबा निर्भयानंद के चरित्र निश्चय ही अनुकरणीय हैं। उपन्यास का नायक विजयकांत आम आदमी का प्रतीक है, जो अपने संघर्ष में कभी टूटता नहीं है। ऐसे आम आदमी को नायक बनाने से उपन्यास अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी और विश्वसनीय बन गया है। सर्वविदित है कि सन् 1789 ई. की फ्रांस की राज्य क्रांति के प्रभाव से पाश्चात्य साहित्य में आभिजात्यवाद के खिलाफ रोमांटिसिज्म का जन्म हुआ था, चूँकि सत्ता से आभिजात्य वर्ग च्युत कर दिये गये थे और आम आदमी सत्तासीन हो गये थे। इसके फलस्वरूप साहित्य के नायकत्व में जो परिवर्तन हुआ, उसका व्यापक प्रभाव विश्व साहित्य पर पड़ा। पाश्चात्य साहित्य में विलियम वर्ड्सवर्थ, लियो टॉलस्टॉय, चेखव, गोर्की से होते हुए यह परंपरा भारतीय साहित्य में प्रेमचंद और शरतचंद्र के रास्ते रामबाबू नीरव तक आता है। आभिजात्यवादी परंपरा के खिलाफ विजयकांत और रूपाली जैसे पात्रों का निर्माण बेहद प्रशंसनीय है।

विजयकांत का चरित्र निश्चय ही अनुकरणीय है। वह अपने दुस्साहस का परिचय देते हुए असत्य और अन्याय के खिलाफ लड़ता है, परंतु कभी भी उग्र और असहिष्णु नहीं होता। न ही वह अपनी मानवतावादी भावनाओं को विस्मृत करता है। भयानक बाढ़ की चपेट में फंसे लोगों को बचाने के क्रम में वह बतहू साहू जैसे व्यक्ति के प्रति भी संवेदनशील है, जो गाँव के गरीबों को सालों से लूटता आया है। इस घटना के बाद साहू जी का हृदय परिवर्तन हो जाता है जो कहीं से भी अस्वाभाविक नहीं लगता है। वह विजयकांत से माफी मांगते हुए कहता है- "मुझ जैसे पापी को माफ कर दो बेटा। हमसे बहुत भारी पाप हो गया। जिन लोगों को हमने लूटा, वही लोग हमारी जान बचाने आए हैं।" विजयकांत बाढ़ की विभीषिका में फंसे हुए लोगों की रक्षा करता ही है और जब वह रोजगार की तलाश में दिल्ली जाता है तो वहाँ एक साहूकार के गिरफ्त से दो मासूम बालकों को मुक्त कराता है। साथ ही वह रूपाली को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने में आशातीत सहयोग करता है। और बदले में कोई अपेक्षा नहीं रखता। ऐसी अवस्था में कोई नायक कामासक्त हो सकता था, परंतु विजयकांत में अपार संयम है। वह निःस्वार्थ प्रेम के उच्चादर्श को पाठकों के समक्ष रखता है। इस तरह विजयकांत में एक उदात्त नायक होने के सारे गुण विद्यमान हैं।

इस कथा की नायिका रूपाली का चरित्र उन तमाम लोगों के लिए प्रकाशपुंज है, जो अक्सर साधनहीनता का रोना रोते हैं, जो अपने भाग्य को कोसते हैं और हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहते हैं। रूपाली अनवरत संघर्ष से अपने लक्ष्य को सिद्ध करती है। वह अपनी स्थिति और परिस्थिति की चिंता किये बिना स्वयं अपने भाग्य को रचती है। रूपाली बहुत ही मजबूत स्त्री पात्र है। उसकी परिस्थिति तो उसे केवल मजदूर बना सकती थी, पर वह आईएएस बनकर दिखा देती है दुनिया को। वह सिद्ध कर देती है कि एक गरीब की बेटी भी चांद का सपना देख सकती है। निष्कर्षतः रामबाबू नीरव रचित उपन्यास 'शंखनाद' मानवीय जिजीविषा और संघर्षशीलता का चरमोत्कर्ष प्रस्तुत करता है। उपन्यास के सभी सद्पात्र अपनी संभावनाओं के शिखर तक पहुँचने की चेष्टा करते हैं और उन्हें सफलता भी मिलती है। उपन्यास का अंत सुखांतक और प्रभावोत्पादक है।

(लेखक श्री राधाकृष्ण गोयनका कालेज सीतामढ़ी (बिहार) में हिंदी के सहायक प्राध्यापक हैं।)

राष्ट्रीय क्रीड़ा प्रतिस्पर्धा में केवि-1 बोकारो की टीम ने लहराया परचम

संवाददाता

बोकारो : केंद्रीय विद्यालय-1, बोकारो के बच्चों ने विभिन्न क्रीडा प्रतिस्पर्धा में राष्ट्रीय स्तर पर अपना परचम लहराया है। केंद्रीय विद्यालय संगठन की ओर से आयोजित होने वाली प्रतियोगिताएं पुणे, लखनऊ तथा हैदराबाद शहर में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की गई थीं। क्षेत्रीय तथा आंचलिक स्तर से विजेता बच्चों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने का यह सबसे बड़ा मंच था। केवि-1 बोकारो की नौवीं कक्षा के छात्र अमित कुमार ने अंडर 14 रिले रेस प्रतियोगिता तथा बाधा दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान लाकर अपना और विद्यालय का मान सम्मान बढ़ाया। संगठन की ओर से उन्हें 23000 रुपए नगद राशि का पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। बालिका संवर्ग में सुनैना कुमारी ने भी 400 मीटर की बाधा दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान लाकर 10000 रुपए की पुरस्कार राशि अपने नाम की। भाला फेंक प्रतियोगिता में 11वीं कला संकाय के छात्र सन्नी कुमार ने 52 मीटर भाला फेंककर केंद्रीय विद्यालय संगठन में राष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष स्थान प्राप्त किया। इन्हें भी 10000 रुपए की नगद पुरस्कार राशि से पुरस्कृत किया गया। विद्यालय के ही दसवीं कक्षा के छात्र संकित कुमार ने रस्सी कूद प्रतियोगिता में दो-दो पुरस्कार जीतकर कुल 13000 रुपए की राशि अपने नाम की। इन्होंने भी राष्ट्रीय स्तर में शीर्ष स्थान प्राप्त किया। केंद्रीय विद्यालय-1 बोकारो के इन छात्रों ने कुल 63000 रुपए की राशि अपने नाम की तथा राष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष स्थान प्राप्त करने के साथ ही एसजीएफआई के लिए क्वालीफाई कर लिया। छात्रों को पुरस्कृत करते हुए विद्यालय के प्राचार्य मनोज कुमार ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में खेलकूद को महत्वपूर्ण बताया।

सेवानिवृत्त शिक्षक भवेंद्र पाठक के निधन पर शोक

संवाददाता

बोकारो : बोकारो इस्पात विद्यालय के वरिष्ठ अंग्रेजी शिक्षक भवेन्द्र पाठक (81) के निधन पर बोकारो के बुद्धिजीवियों, व शिक्षाविदों ने शोक व्यक्त किया है। मैथिली कला मंच, काली पूजा ट्रस्ट के अध्यक्ष कृष्ण चन्द्र झा, महामंत्री सुनील मोहन ठाकुर, रामबाबू चौधरी, गोविन्द झा, अविनाश झा, अरुण पाठक, गंगेश पाठक सहित पत्रकार विजय कुमार झा व अन्य मैथिल समाजसेवियों ने उनके निधन को बोकारो में मैथिल समाज के लिए अपूरणीय क्षति बताई है। स्वर्गीय पाठक पिछले कुछ दिनों से बीमार चल रहे थे। उल्लेखनीय है कि मधुबनी जिले के सतलखा निवासी स्वर्गीय पाठक के पुत्र सत्येन्द्र पाठक एक वरिष्ठ अंग्रेजी पत्रकार हैं, जो राजधानी रांची के एक बड़े अंग्रेजी अखबार में कार्य करने के बाद फिलहाल कतर की राजधानी दोहा के अंग्रेजी अखबार 'कतर ट्रिब्यून' में अपनी सेवा दे रहे हैं।

पेज- 1 का शेष

मैं झारखंड हूं...

सोरेन फिर एक साल के लिए मुख्यमंत्री बने और 2010 में 1 जून से लेकर 10 सितंबर तक पुनः राष्ट्रपति शासन रहा। अर्जुन मुंडा तीन वर्षों के लिए 2010 से 2013 तक मुख्यमंत्री रहे और राज्य में लगभग सात महीने के लिए 2013 में तीसरी बार राष्ट्रपति शासन लागू रहा। तत्पश्चात एक वर्ष के लिए हेमंत सोरेन को पुनः मुख्यमंत्री की गद्दी मिली। तत्पश्चात 28 दिसंबर 2014 से 28 दिसंबर 2019 तक रघुवर दास ने पांच वर्षों का कार्यकाल पूरा किया। 29 दिसंबर 2019 से हेमंत सोरेन राज्य के मुखिया का दायित्व बखूबी संभाल रहे हैं। हालांकि, मौजूदा स्थिति में यह दायित्व भी सवालों के घेरे में आ चुका है। क्या अधिकारी, क्या सत्ताधारी, सभी पर भ्रष्टाचार में आकंठ डूबने के आरोप हैं। राज्य के मुखिया तक भी इससे अछूते नहीं रहे। जबकि, कई अधिकारी आज जेल की सलाखों के पीछे हैं। जिस अधिकारी पर राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था के संचालन की जवाबदेही है, वो लूट-खसोट के आरोपों में घिरे हैं। ईडी-आईटी की रेड में आए दिन इसके खुलासे हो रहे हैं। यह राज्य के विकास से ज्यादा नेताओं के अपने विकास की प्राथमिकता का जीवंत उदाहरण है।

बीते दो दशक में यकीनन विकास के कई नए आयाम जुड़े हैं, परंतु अपेक्षाकृत विकास की बाट आज भी यह प्रदेश जोह रहा है। उद्योगों के मामले में तो झारखंड निश्चित तौर पर धनी है, परंतु शिक्षा, स्वास्थ्य से जुड़े काम आज भी उम्मीदों की कसौटी पर खरा नहीं उतर सके हैं। बेरोजगारी के चलते राज्य से हरसाल हजारों युवक परदेस पलायन कर रहे हैं। इस चक्कर में आए दिन उनकी वहां मौत की घटनाएं भी सामने आती रहती हैं। सच कहें, तो सरकारी योजनाएं ही राज्य में इतनी हैं कि अगर पूरी ईमानदारी के साथ अगर अधिकारी वर्ग के लोग उन्हें क्रियान्वित करें, तो बेरोजगारी के साथ-साथ विकास के भी नए अध्याय जुड़ सकेंगे। लेकिन, हर जगह भ्रष्टाचार और चढ़ावा की पुरानी परिपाटी आजतक हमारे सिस्टम के लिए जंग बनी है और यही विकास में सबसे बड़ा रोड़ा है। खैर... अब भी ज्यादा कुछ नहीं बिगड़ा। राज्य गठन की इस 22वीं वर्षगांठ पर इस दिशा में सभी को संकल्पित होने की जरूरत है। विकास में आमलोगों की भी भागीदारी उतनी ही जरूरी है जितनी अधिकारियों की। बिना जनसहयोग के कोई भी योजना सही तरीके से मूर्त रूप नहीं ले सकती। नेताओं को खास तौर से ध्यान देने की जरूरत है। कम से विकास के नाम पर तो वे राजनीति न करें। जब सभी सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ेंगे, तो निश्चय ही भगवान बिरसा की इस धरती को हम विकसित और खुशहाल बना सकेंगे और झारखंड का नाम भ्रष्टाचार की पहचान की बजाय विकास के लिए जाना जाएगा।

पीएम मोदी का झारखंड दौरा - एक तीर, कई निशाने

विशेष संवाददाता

रांची : भगवान बिरसा की जयंती पर उनके पैतृक गांव उलिहातू पहुंचने वाले देश के पहले प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी ने एक नया सियासी आयाम जोड़ दिया है। पिछली बार राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू आई थीं, जो पहली बार किसी राष्ट्रपति का आना था। अब पीएम का दौरा झारखंड के लिए काफी अहम माना जा रहा है। बता दें कि पीएम मोदी के आह्वान पर पिछले तीन वर्षों से पूरा देश बिरसा मुंडा की जयंती 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाता है। इसी दिन झारखंड राज्य का स्थापना दिवस भी है। यह राज्य के लिए दोहरे गौरव का दिन है। वैसे तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने झारखंड दौरे के दौरान केंद्र सरकार की योजनाओं के बारे में लोगों को जागरूक करने तथा इसका लाभ लेने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से घूमने वाली विकसित भारत संकल्प यात्रा का भी शुभारंभ करने पहुंचे, लेकिन उनकी यह झारखंड यात्रा सियासत के नजरिए से कई मायनों में देखी जा रही है।

राजनीतिक विशेषज्ञों की मानें तो उनका यह दौरा एक तीर से कई निशाने साधने जैसा है। विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों के लिए पीएम पीवीटीजी मिशन लॉन्च करना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा झारखंड समेत छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के आदिवासियों को साधने का प्रयास माना जा रहा है। अभी छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में विधानसभा चुनाव हो रहा है। जिन समूहों को लक्ष्य कर यह योजना लॉन्च हो रही है, उनकी आबादी लगभग 28 लाख है। इस पर केंद्र सरकार करीब 24 हजार करोड़ रुपए खर्च करेगी। झारखंड, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में इनकी अच्छी संख्या है। भाजपा इस बात को लगातार प्रचारित करती है कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने जनजातीय कल्याण मंत्रालय बनाया, वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्र भारत के इतिहास पहली बार नौ आदिवासियों को केंद्रीय मंत्री बनाया।

जनजातीय गौरव दिवस के लिए रांची से खूंटी तक आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए पीएम जब रांची पहुंचे, तो रांची एयरपोर्ट पर राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन, मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी तथा पार्टी के अन्य प्रमुख नेताओं ने उनका स्वागत किया। यहां से रोड शो की शक्ल में पीएम का काफिला राजभवन पहुंचा।

ये नजदीकी कुछ और तो नहीं?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के झारखंड दौरे पर आने के क्रम में जिस अंदाज में राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने उनका स्वागत किया। हालांकि, यह प्रोटोकोल का हिस्सा है, परंतु दोनों के बीच जो केमिस्ट्री दिखी, वह किसी 'सियासी केमिकल रिएक्शन' का अंदेशा भी माना जा रहा है। वह बेहद गर्मजोशी के साथ मेजबानी-अगवानी में जुटे रहे। दोनों ने एक-दूसरे के प्रति जिस तरह सदाशय भाव-भंगिमाएं प्रदर्शित की, उससे संबंधित तस्वीरें झारखंड में चर्चा का विषय बन गई हैं। हेमंत सोरेन और सीएमओ ने पीएम के दौरे पर उनके स्वागत, अभिनंदन और आग्रह को लेकर सोशल मीडिया एक्स पर कुल सात ट्वीट किए। सियासी हलकों में चर्चा है कि हाल के दिनों में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन प्रधानमंत्री मोदी के साथ रिश्ते सुधारने की कोशिश में लगे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 14 नवंबर की रात करीब 9.30 बजे विशेष विमान से रांची के बिरसा मुंडा एयरपोर्ट पर पहुंचे। उनके आगमन से करीब एक घंटे पहले मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन उनकी अगवानी को एयरपोर्ट पर पहुंचे। उन्होंने पीएम को गुलदस्ता देकर दोनों हाथ जोड़े तो पीएम मोदी ने बेहद गर्मजोशी से उनके जुड़े हुए हाथों को अपने हाथ में ले लिया। बहरहाल, हाथों में हाथ के इस मेलजोल को लेकर राज्य में राजनीतिक चर्चाएं भी गर्म हो गई हैं। अब आगे होगा क्या, यह भविष्य के गर्भ में है, लेकिन अटकलबाजियों का सिलसिला तेज हो गया है।

लोकगायिका कुसुम व वरिष्ठ पत्रकार महेंद्र सम्मानित

विशेष संवाददाता

अयोध्या : वृंदावन के रुकमणी विहार छटीकरा रोड पर स्थित होटल द रॉयल भारती में इंडियन न्यूज एक्सप्रेस द्वारा आयोजित न्यूजमेकर्स अवार्ड्स समोराह में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली विभूतियों को इंडियन न्यूज एक्सप्रेस के एडिटर इन चीफ नीरज सिंह, मुख्य अतिथि मथुरा के महापौर विनोद अग्रवाल व विशेष अतिथि अपर जिलाधिकारी नगर अश्वनी कुमार सिंह ने सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रेस क्लब अयोध्या के अध्यक्ष महेंद्र त्रिपाठी को राम मंदिर आंदोलन के लिए की गई उत्कृष्ट पत्रकारिता और ऑल इंडिया रेडियो की एनाउंसर व लोकगायिका कुसुम वर्मा को कला जगत, समाजसेवा व शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए अंग वस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कुसुम वर्मा ने जन-जन के राम भजन प्रस्तुत कर श्रीकृष्ण की जन्मभूमि को राममय बना दिया। वहीं राधा रानी के भजन सुन श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए।

CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY
शिवम् हॉस्पीटल में
सेल के रिटायर्ड कर्मचारियों के लिए
मोतियाबिन्द का ऑपरेशन
एवं लेंस लगाया जाता है।
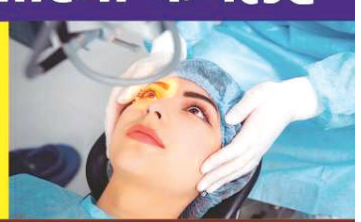
E-2, LAXMI MARKET, SECTOR-4, B.S.CITY-827004
PH: 06542-232623/233475, MOB: 7488090631

झारखंड स्थापना दिवस की शुभकामनाएं
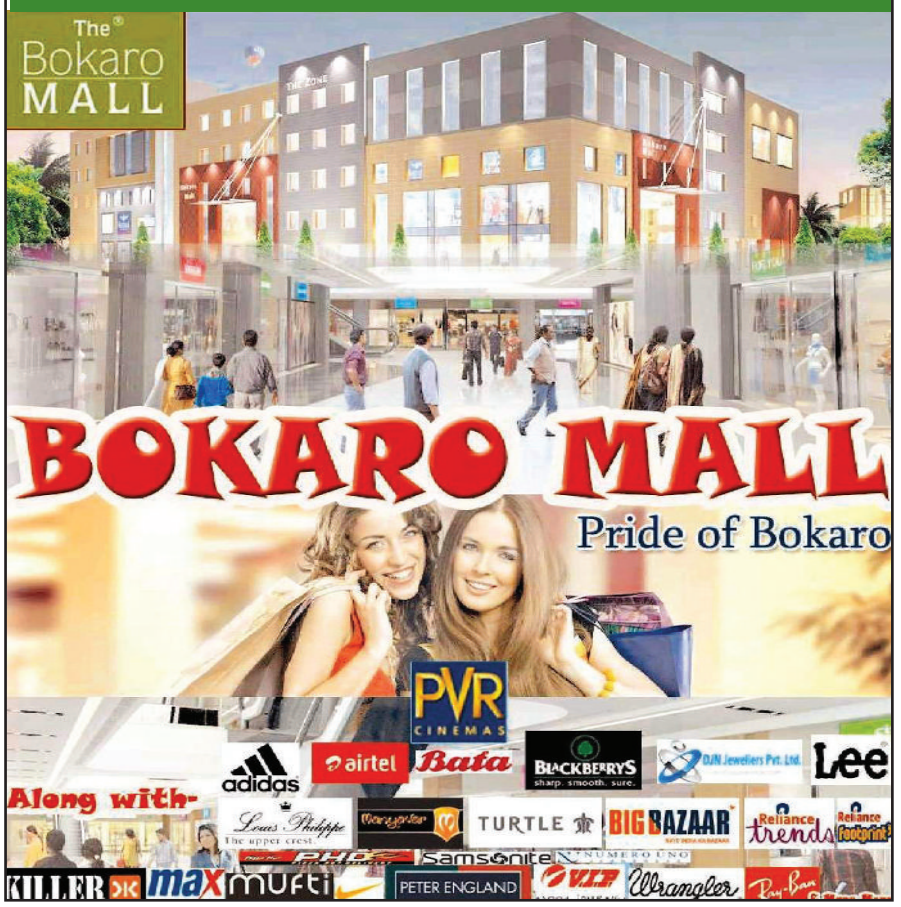

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा डीबी कॉर्प लिमिटेड, भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, गोविन्दपुर रोड, जीके आश्रम, धनबाद से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **कैप्टन संजय,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई. पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)